Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

2. सनातन एवं सांस्कृतिक विरासत : महाकुम्भ

डॉ. वन्दना गुप्ता
सहायक आचार्य
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु (उ.प्र.)
vandanahistory1@gmail.com

सारांश

आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है "कुम्भ"। ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुम्भ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच कर ले आता है। कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था अपितु इसका इतिहास समय के प्रवाह से स्वयं ही बनता चला गया। वैसे भी धार्मिक परम्पराएं हमेशा आस्था एवं विश्वास के आधार पर टिकती हैं न कि इतिहास पर। यह कहा जा सकता है कि कुम्भ जैसा विशालतम् मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है। ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार यह मेला पौष पूर्णिमा के दिन आरंभ होता है और मकर संक्रान्ति इसका विशेष ज्योतिषीय पर्व होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति के होने वाले इस योग को "कुम्भ स्नान-योग" कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार इस दिन खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है। हिंदू धर्म में कुंभ को तीर्थ के समान दर्जा दिया गया है कुंभ स्नान से पितृपक्ष भी शांत होते हैं और अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं यह मान्यता है कि मनुष्य को अपने जीवन में कुंभ स्नान जरूर करना चाहिए क्योंकि हिंदू धर्म में कुंभ स्नान के समान किसी भी स्नान को नहीं माना जाता है। कुंभ मेले को रोजगार का भी प्रमुख स्रोत माना गया है। कुंभ मेले से रोजगार के अवसर भी प्रदान होते है। कुंभ में सभी देवी-देवता प्रवासी के रूप में निवास करते हैं. कुंभ में

सबसे श्रेष्ट प्रयाग के कुंभ को माना गया है. तीर्थराज कहा गया है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार कुंभ में स्नान करने से सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिल जाती हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासत अनादिकाल से ही विश्व के लिए आकर्षण का केंद्र रही है। इस विरासत का एक महत्वपूर्ण प्रतीक "महाकुंभ" है, जो न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि यह भारत की सनातन परंपरा, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक चेतना का एक जीवंत उत्सव है। महाकुंभ के आयोजन की पृष्ठभूमि वैदिक काल से जुड़ी हुई है और यह चार स्थलों—प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक—में चक्रानुसार आयोजित होता है। यह शोध पत्र महाकुंभ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक पक्षों का विश्लेषण करता है।

शब्द कुंजी- कुम्भ, महाकुंभ, प्रयाग, धर्म, संस्कृति, नदी, पौराणिक, आध्यात्मिक

प्रस्तावना

कुम्भ मेला हिन्दू धर्म का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ पर्व स्थल- हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष में इस पर्व का आयोजन होता है। मेला प्रत्येक तीन वर्षों के बाद नासिक, इलाहाबाद, उज्जैन और हरिद्वार में बारी-बारी से मनाया जाता है। इलाहाबाद में संगम के तट पर होने वाला आयोजन सबसे भव्य और पवित्र माना जाता है। इस मेले में करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित होते है। ऐसी मान्यता है कि संगम के पवित्र जल में स्नान करने से आत्मा शुद्ध हो जाती है। हिंदू धर्म मे जिस तरह से चारधाम यात्रा बहुत ही महत्वपूर्ण मानी गई है, उसी तरह कुंभ स्नान का भी महत्व है। हर चार वर्ष में अर्धकुंभ लगता है और 12 वर्ष में महाककुंभ लगता है।

कुंभ मेले में कुंभ का शाब्दिक अर्थ “घड़ा, सुराही, बर्तन” है। यह वैदिक ग्रंथों में पाया जाता है। इसका अर्थ, अक्सर पानी के विषय में या पौराणिक कथाओं में अमरता के अमृत के बारे में बताया जाता है। मेला शब्द का अर्थ है,किसी एक स्थान पर एकजुट होना, शामिल होना, मिलना, एक साथ चलना, सभा में या फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना।यह शब्द ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिंदू ग्रंथों में भी पाया जाता है। इस प्रकार, कुंभ मेले का अर्थ है “एक सभा -मिलन, मिलन” जो “जल या अमरत्व का अमृत” है। कुंभ मेले में, पहले स्नान का नेतृत्व संतों द्वारा किया जाताहै, जिसे कुंभ के शाही स्नान के रूप

में जाना जाता है और यह सुबह 3 बजे शुरू होता है। संतों के शाही स्नान के बाद आम लोगों को पवित्र नदी में स्नान करने की अनुमति मिलती है। कुंभ मेले में शाही स्नान के साथ साथ अन्य गतिविधियां भी होती हैं, जैसे प्रवचन, कीर्तन और महा प्रसाद आदि। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह माना जाता है कि जो इन पवित्र नदियों के जल में डुबकी लगाते हैं, वे अनंत काल तक धन्य हो जाते हैं. और वह सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं और उन्हें मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। कुंभ मेला (Kumbh Mela) आस्था का विशाल हिन्दू तीर्थ है। कुंभ मेला हिंदू धर्म में एक प्रमुख तीर्थ और त्योहार के रूप में मनाया जाता है। कुंभ में गुरु, सूर्य और चंद्रमा ग्रह का विशेष महत्व माना गया है. कुंभ के आयोजन में भी इन ग्रहों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। जिन लोगों के जीवन में गुरु, सूर्य और चंद्रमा से जुड़ी कोई समस्या बनी हुई है वे यदि कुंभ में शुभ तिथियों में स्नान करते हैं तो उनकी समस्याएं दूर होती हैं

भारतीय सनातन संस्कृति में कुंभ विश्वास, आस्था, सौहार्द और संस्कृतियों के मिलन का सबसे बड़ा पर्व है। कुंभ मेले का इतिहास कम से कम 850 साल पुराना है। ऋग्वेद की 10वीं मंडल के 89 सूक्त के 7वें मंत्र में 'कुंभ' शब्द मिलता है जोकि इंद्र के बारे में है. इसमें इंद्र को शत्रुनाशक और जल प्रदान करने वाला बताया गया है. ऋग्वेद में कुंभ का अर्थ कच्चे घड़े से है| इसके अतिरिक्त अथर्ववेद , मत्स्य पुराण ,पद्मपुराण महाभारत एवं श्री कुम्भशत्कम में भी इसके महत्त्व का वर्णन मिलता है | पुराणों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि शंकराचार्य ने इसकी शुरुआत की थी और कुछ कथाओं के अनुसार कुंभ की शुरुआत समुद्र मंथन से ही हो गई थी। इसके बारे में जो प्राचीनतम वर्णन मिलता है वह सम्राट हर्षवर्धन के समय का है, जिसका चीन के प्रसिद्ध तीर्थयात्री ह्वेनसांग द्वारा किया गया है।

कुम्भ की ऐतिहासिकता :

कुम्भ-पर्व कब से मनाया जा रहा है? इसका कोई सुनिश्चित प्रमाण नहीं मिलता, पर इस पर्व की प्राचीनता का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि वेदों में इस पर्व के सम्बन्ध में अनेक मन्त्र मिलते हैं और पुराणों में तो इसकी कथा विस्तारपूर्वक आई है। उदाहरणार्थ-

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्नसिन्धून् बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रोअकृणुत स्वयुग्भिः1

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

अर्थात्, कुम्भ-पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं दान-होमादि सत्कर्मों के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है जैसे कुठार वन को काट देता है। जिस प्रकार गंगा नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है, उसी प्रकार कुम्भ-पर्व मनुष्य के पूर्वसंचित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन (कच्चे) बड़े की तरह बादल को नष्ट-भ्रष्टकर संसार में सुवृष्टि प्रदान करता है।

युवं नरा स्तुवते पक्रियाय कक्षीवते अरदतं पुरन्धिम् कारोतराच्छफादश्वस्व वृष्णः शतं कुम्भानसिञ्चत सुरायाः

कुम्भो वनिष्ठुर् जनिता शचीभिर् यस्मिन् अग्रे योन्यां गर्भो ऽ अन्तः।

प्लाशिर् व्यक्तः शतधार ऽ उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः॥ 2

कुम्भ-पर्व सत्कर्म के द्वारा मनुष्य को इहलोक में शारीरिक सुख देने वाला और जन्मान्तरों में उत्कृष्ट सुखों को देने वाला है।

सामवेद में कहा गया है-

आविशन्कलश सुतो विश्वा अर्षन्त्रभिश्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते॥3

अथर्ववेद में कहा गया है-

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहिस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः। स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥

अर्थात, हे सन्तगण। पूर्णकुम्भ बारह वर्ष के बाद आया करता है, जिसे हम अनेक बार प्रयागादि तीर्थों में देखा करते हैं। कुम्भ उस समय को कहते हैं जो महान् आकाश में ग्रह-राशि आदि के योग से होता है।

चतुर कुम्भाश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्नामुदकेन दहना। कुम्भीका दूषीकाः पीयकान्।

पुराणों में अमृत-कुम्भ के प्रादुर्भाव की घटना समुद्र-मन्थन से जुड़ी हुई है। समुद्र-मन्थन को कथा विष्णुमहापुराण (अंश 1. अध्याय 9), स्कन्दमहापुराण (माहेश्वरखण्ड, केदारखण्ड, अध्याय 9-12), मत्स्यमहापुराण (अध्याय 249-251), भागवतमहापुराण (स्कन्ध 8, अध्याय 5-12), वाल्मीकीयरामायण (बालकाण्ड, सर्ग 45), महाभारत (आदिपर्व, अध्याय 17-19) तथा हरिवंशपुराण (भविष्यपर्व, अध्याय 30) में आती है। इन सभी स्थलों पर कथा अपने मूल स्वरूप में एक समान है, केवल कुछ वर्णनात्मक विविधता एवं समुद्र-मन्थन से निकले रत्नों की संख्या में विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है।

मत्स्यपुराण में कहा गया है:

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

सत्यवादी जितक्रोधो ह्यहिंसायां व्यवस्थितः । धर्मानुसारी तत्त्वज्ञो गोब्राह्मणहिते रतः ॥ गङ्गायमुनयोर्मध्ये स्नातो मुच्येत किल्बिषात् । मनसा चिन्तयन्कामानवाप्नोति सुपुष्कलान् ॥ ततो गत्वा प्रयागं तु सर्वदेवाभिरक्षितम् । ब्रह्मचारी वसेन्मासं पितृन्देवांश्च तर्पयेत् । ईप्सितांल्लभते कामान्यत्र यत्राभिजायते ॥ तपनस्य सुता देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता। समागता महाभागा यमुना तत्र निम्नगा। तत्र संनिहितो नित्यं साक्षादेवो महेश्वरः ॥ दुष्प्राप्यं मानुषैः पुण्यं प्रयागं तु युधिष्ठिर। देवदानवगन्धर्वा ऋषयः सिद्धचारणाः । तदुपस्पृश्य राजेन्द्र स्वर्गलोकमुपासते ॥5

अर्थात, जो मनुष्य सत्यवादी, क्रोधरहित, अहिसापारायण, धर्मानुरागी, तत्त्वज्ञ और गौ एवं ब्राह्मण के हित में तत्पर रहकर गंगा और यमुना के संगम में स्नान करता है, वह पाप से मुक्त हो जाता है तथा जो मन से चिंतनमात्र करता है, वहदेवों और पितरों का तर्पण करना चाहिए। वहाँ रहते हुए मनुष्य जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ-वहाँ उसे अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति होती है। वहाँ सूर्य-कन्या महाभागा यमुना देवी, जो तीनों लोकों में विख्यात हैं, नदी रूप में आई हुई हैं और साक्षात् भगवान् शंकर वहाँ नित्य निवास करते हैं। यह पुण्यप्रद प्रयाग मनुष्यों के लिए दुर्लभ है। देव, दानव, गन्धर्व, ऋषि, सिद्ध, चारण, आदि गंगाजल का स्पर्श कर स्वर्गलोक में विराजमान होते हैं।

महाभारत में कहा गया है:

प्रवागं जघन स्थानमुपस्थमृषयो विदुः। प्रयागं सप्रतिष्ठानं कम्बलाश्वतरौ तथा ॥ तीर्थं भोगवती चौव वेदिरेषा प्रजापतेः। तत्र वेदाश्च यज्ञाश्च मूर्तिमन्तो युधिष्ठिर ॥ प्रजापतिमुपासन्ते ऋषयश्च तपोधनाः ।
यजन्ते क्रतुभिर्देवास्तथा चक्रवरा नृपाः ॥ ततः पुण्यतमं नाम त्रिषु लोकेषु भारत। प्रयागं सर्वतीर्थेभ्यः प्रभवत्यधिकं विभो ॥ गमनात तस्य तीर्थस्य नामसंकीर्तनादपि। मृत्युकाल मयाच्चापि नरः पापात्प्रमुच्यते ॥ तत्राभिषेकं यः कुर्यात्संगमे संशितव्रतः । पुण्यं स फलमाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः ॥

अर्थात्, ऋषियों ने प्रयाग को जघनस्थानीय उपस्थ बताया है। प्रतिष्ठानपुर (झूसी) सहित प्रयाग, कम्बल और अश्वतर नाग तथा भोगवतीतीर्थ यह ब्रह्मा जी की बेटी है। युधिष्ठिर। उस तीर्थ में वेद तथा यज्ञ मूर्तिमान् होकर रहते हैं और प्रजापति की उपासना करते हैं। तपोधन ऋषि, देवता तथा चक्रधर नृपतिगन वहां यज्ञों द्वारा भगवान् का भजन करते हैं। भरतनन्दन। इसीलिए तीनों लोकों में प्रयाग को सब तीर्थो की अपेक्षा श्रेष्ठ एवं पुण्यतम बताते हैं। उस तीर्थ में जाने से अथवा उसका नाम लेने मात्र से मनुष्य मृत्यु

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

काल के भय और पाप से मुक्त हो जाता है। वहां के विश्वविख्यात संगम में जो स्नान करता है, वह राजसूय और अश्वमेध यज्ञों का पुण्य फल प्राप्त कर लेता है।

महाभारत में पुनः कहा गया है:

दश तीर्थसहस्राणि तिस्रः कोट्यस्तथा पराः। समागच्छन्ति माध्यां तु प्रयागे भरतर्षभ॥ माघमासं प्रयागे तु नियतः संशितव्रतः॥ स्नात्वा तु भरतश्रेष्ठ निर्मलः स्वर्गमाप्नुयात्।6

अर्थात्, माघ मास की अमावस्या को प्रयाग तीर्थ में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघ के महीने में प्रयाग में स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है।

प्रयागराज में प्रति माघ मास में 'माघ-मेला' लगता है। इसे 'कल्पवास' कहते हैं। बहुत-से श्रद्धालु यात्री कल्पवास करने प्रयाग पहुँचते हैं। कल्पवास कोई सौर मास की मकर संक्रान्ति से कुम्भ की संक्रान्ति तक मानते हैं और कोई चन्द्रमास के अनुसार माघ महीनेभर की मानते हैं। यहाँ प्रति बारहवें वर्ष जब बृहस्पति वृष-नराशि में और सूर्य मकर राशि में होते हैं, कुम्म पर्व का आयोजन होता है। इसमें लाखों यात्री यहाँ आते हैं। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के साहित्य-विभाग के विभागाध्यक्ष पण्डित शिवजी उपाध्याय ने स्वरचित 'श्री कुम्भशतकम् (लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली से 1997 में प्रकाशित) में नीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर लगने वाले कुम्भ पर्व का अत्यंत सुन्दर काव्यात्मक वर्णन किया है। वहाँ उस अवसर पर उपस्थित होने वाले नर-नारियों का वर्णन करने के साथ ही कुम्भ-स्नान से होने वाले अध्यात्मिक लाभ पर भी विशद प्रकाश डाला है। कुछ श्लोक द्रष्टव्य हैं:

पुण्यक्षेत्रे प्रयागे सरिदमलजले संगमे यत् त्रिवेणी-
तीर्थे चाकण्ठपूर्णेऽम्बुनि वदनुदिनं मज्जनं साम्बुपानम्।
मर्त्यानां मर्त्यभावं परिहरति नृणां यच्छदेकान्तमुक्ते-रन्तमर्मोदामृतत्वं त्रिभुवनविभवोत्कृष्टमिष्टं फलं तत्॥

अर्थात् पुण्यक्षेत्र प्रयाग में (गंगा, यमुना, सरस्वती) नदियों के संगम पर त्रिवेणीतीर्थ में, आकण्ठ जल में जो प्रतिदिन (महीनेभर) स्नान और जलपान होता है, वह मनुष्यों के मर्त्यभाव का विनाश करता है, साथ ही एकान्तमुक्ति के आन्तरिक हर्ष के अमृतत्व एवं त्रिभुवन के वैभव के उत्कृष्ट अभीष्ट फल को भी प्रदान करता है। वह कुम्भ पर्व पुनः उपस्थित है।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

नासिक्ये सोज्जयिन्यामनुपदमुदयद् यद् हरिद्वारपुर्या कुम्भाख्याम्भोऽमृतं तल्लसदमितपरानन्दसन्दोहपूर्णम् ।

पुंजीभूत प्रयागे प्रथवति परितोऽपूर्वपर्वप्रकर्ष लोकोत्कर्ष प्रहर्ष प्रदममरपद सन्ददत्मज्जनेभ्यः ।।7

अर्थात, जो नासिक, उज्जयिनी सहित हरिद्वारपुरी में क्रमश प्रकट होता हुआ

कुम्भ-मेलों के पुनरुद्धारक आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य

वेदों के उल्लेख और पुराणों में प्राप्य कुम्भ के उद्भव की कथा की विवेचना के बाद कुम्भ की प्राचीनता के सम्बन्ध में संदेह की कोई संभावना नहीं रह जाती है। पाली-साहित्य में भगवान् बुद्ध ने अपने वचनों में नदी-मेलों का उल्लेख किया है। इससे ऐसा लगता है कि ये कुम्भ के प्रारम्भिक रूप रहे होंगे। परन्तु इस पर अवश्य विचार किया जा सकता है कि कुम्भ-मेले का वर्तमान धार्मिक स्वरूप संसार में कब से प्रचलित हुआ? और किसके द्वारा प्रचलित हुआ ? पर्याप्त अध्ययन एवं शोध के आधार पर यही तिलकृर्ष निकलता है कि कुम्भ-मेलों के पुनरुद्धारक (प्रवर्तक नहीं) वस्तुतः आद्य जगदगुरु शंकराचार्य (509-477 ई.पू.) है। भगवत्पाद जगदगुरु आद्य शंकराचार्य, भारत में वैदिक धर्म के पुनर्जागरण के इतिहास में सर्वोपरि स्थान रखते हैं। उन्होंने मात्र 32 वर्ष की अल्पायु में देश को एकसूत्र में पिरोने और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जितना कार्य किया, वह अनुपम है। आद्य शंकराचार्य के समस्त कार्यों का मूल्यांकन करना लेखनी के वश की बात नहीं है। देश के चार स्थानों पर शांकर-मठों की स्थापना करके वहाँ 'शंकराचार्य की नियुक्ति; दशनामी-संन्यासियों का संगठन बनाकर उनके लिए अखाड़ों की व्यवस्था, द्वादश ज्योतिर्लिंगों का व्यवस्थापन, प्रस्थानत्रयी (उपनिषद् ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता) पर भाष्य तथा अद्वैतवेदान्त के अनेक मौलिक ग्रंथों एवं जनसाधारण भी इन मेलों से जुड़ता गया। आज कुम्भ-मेलों का जो स्वरूप हमे दिखाई देता है, वह प्रारंभ से ऐसा रहा होगा, यह नहीं कहा जा सकता। आद्य शंकराचार्य ने कुम्भ-मेले के माध्यम से हिंदू-धर्म और संस्कृति को सुदृढ़ एवं अक्षुण्ण बनाने का महती कार्य किया। कहा जाता है कि उन्होंने प्रयाग के पास प्रतिष्ठानपुर (झूसी) की सीमा से शुरू होने वाले इन्द्रवन में संतों का सम्मेलन आयोजित करके सनातन-धर्म की रक्षा के लिए शास्त्रों के साथ शस्त्रों के भी अभ्यास का संकल्प दिलाया। उन्हीं के आदर्श एवम् आवरणानुसार ही कुम्भ-पर्व के चारों सुप्रसिद्ध तीर्थो (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक) में सभी सम्प्रदायों के साधु-महात्मा आदि देश, काल, परिस्थिति के अनुसार जगत कल्याण की भावना से धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु उसका प्रचार-प्रसार करते रहें, ताकि सर्वविधि से देश और समाज के समस्त सम्प्रदायों, प्राणियों का कल्याण हो सके।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

आद्य शंकराचार्य के मन में भारतवर्ष में चार कोनों पर पीठों की स्थापना का विचार चार कुम्भ-स्थलों के समानांतर उत्पन्न हुआ होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। चारों मठों की स्थापना के पीछे साधु-समाज को संगठित करने तथा उनके द्वारा अद्वैतवाद का प्रचार कराने का संकल्प भी अवश्य रहा होगा। दशनामी-संन्यासियों को अलग-अलग पीठों से किस प्रकार सम्बद्ध किया गया है, यह जानना स्वयं एक रोचक विषय है, जिसका सास्कृतिक महत्त्व निर्विवाद है। 'वन' एवम् 'अरण्य' नामक संन्यासी गोवर्धन पीठ, पुरी से जोड़े गए, 'तीर्थ' और 'आश्रम' नामधारी संन्यासी शारदा पीठ, द्वारका से सम्बद्ध किए गए: 'गिरि', 'पर्वत' और 'सागर' नामक संन्यासी ज्योतिर्मठ से जोड़ दिए गए और 'पुरी, 'भारती' और 'सरस्वती' नामक सन्यासी श्रृंगेरी शारदा मठ से सम्बद्ध किए गए।

कुम्भ और दशनामी सम्प्रदाय

वैसे तो अपने देश में नागा-संन्यासियों की परम्परा अति प्राचीन है, तथापि इनमें से अधिकांश नागा-संन्यासी वे हैं जो आद्य शंकराचार्य द्वारा संगठित दशनामी-सम्प्रदाय के अंतर्गत आते हैं। सुप्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार (1870-1958) और कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी (1887-1971) ने दशनामी सम्प्रदाय और अखाड़ों पर विस्तृत प्रकाश डाला है।इस सम्प्रदाय के संन्यासी विशेष प्रकार के भगवे वस्त्र धारण करते हैं, लेकिन कट्टर दशनामो निर्वस्व रहते हैं, जिन्हें नागा साधु कहा जाता है। इस सम्प्रदाय के अनुयायी सिर तथा शरीर के अन्य भागों पर श्मशान की भस्म से तीन धारियों का तिलक लगाते हैं और गले में 54 या 108 रुद्राक्षों की माला पहनते हैं। वे अपनी दादी-बाल बढ़ने देते हैं और बाल खुले रखते हैं, जो कंधों तक आते हैं या उन्हें सिर के ऊपर जटा के समान लपेटकर बांधते हैं। कुम्भ-मेलों में इस सम्प्रदाय के अनुयायियों की भीड़ उमड़ पड़ती है। दशनामियों को धर्म की सर्वाधिक समझ इसलिए होनी है, क्योंकि आद्य शंकराचार्य के काल में ब्राह्मणजन उन्हीं से दीक्षित और शिक्षित होते थे। साधुओं के इस समाज की हिंदू धर्म में सर्वाधिक प्रतिष्ठा है। इस समाज में अदम्य साहस और नेतृत्व-शक्ति होती है। कुम्भ के सबसे पवित्र शाही स्नान में सर्वप्रथम स्नान का अधिकार इन्हें ही मिलता है। इस सम्प्रदाय में महत आचार्य और मतमण्डलेश्वर आदि पद होने हैं

गंगा, यमुना और सरस्वती (अन्तःसलिला) के पावन संगम (त्रिवेणी) पर स्थित प्रयाग को 'तीर्थराज' कहा गया है। प्रयागराज आदिकाल से पुराणों एवं शास्त्रों के अनेक विवरणों में किसी-न-किसी रूप में उपस्थित रहा है। कहा जाता है कि भगवान् ब्रह्मा

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

ने यहाँ प्रथम ('प्र') यज्ञ ('याग') किया था, इसलिए इसका नाम 'प्रयाग' पड़ा। मुगल सम्राट अकबर (1556-1605) ने 1575 में प्रयाग के पास 'इलाहावास' नाम का एक नगर बसाया। यही कालान्तर में 'इलाहाबाद' (रोमन लिपि में इसे "Allahabad", 'अल्लाह्यबाद' लिखा जाता है) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 'इलाहाबाद' शब्द अरबी-शब्द 'इल्लाह' और फारसी शब्द 'आबाद' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है 'ईश्वर का शहर'। 443 वर्षों तक सरकारी रिकार्ड में 'इलाहाबाद' नाम ही प्रचलित रहा। किन्तु इसी वर्ष उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के प्रयासों से इस शहर को पुनः 'प्रयागराज' नाम प्राप्त हुआ है। गंगा-यमुना की धारा ने पूरे प्रयाग-क्षेत्र को तीन भागों में बाँट दिया है। ये तीनों भाग अग्निस्वरूप-यज्ञवेदी माने गए हैं। इनमें गंगा-यमुना के मध्य का भाग गाईपत्याग्नि, गंगा-पार का भाग (प्रतिष्ठानपुर-घूंसी) आहवनीय अग्नि और यमुनापार का भाग (अलर्कपुर-अरैल) दक्षिणाग्नि माना जाता है। इन भागों में पवित्र होकर एक-एक रात्रि निवास से इन अग्नियों की उपासना का फल प्राप्त होता है। ऋक्-परिशिष्ट में कहा गया है

सितासिते सरिते यत्र सङ्गमे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।
ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनास्ते अमृतत्वं भजन्ते ॥

अर्थात, जिनके जल श्वेत और श्याम वर्ण के हैं, जहाँ गंगा और यमुना मिलती हैं, उस प्रयाग संगम में स्नान करने वालों को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। जो धीर पुरुष वहाँ शरीर त्याग करते हैं, उन्हें अमृतत्व अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कतिपय विद्वानों के अनुसार चीनी यात्री यूएनत्सांग (602-664 ई.) का यात्रा-विवरण (श्सी-यू-कोश, जिसका अंग्रेजी अनुवाद अंग्रेज प्राच्यविद सैम्यूअल बिल ने किया है) कुम्भ-मेले का प्राचीनतम ऐतिहासिक दस्तावेज है। यूएनत्सांग ने अपनी भारत-यात्रा के दौरान 644 ई. में 'पोलोयीकिया' (प्रयाग) में इस मेले का उल्लेख किया था। हाएनत्सांग का उल्लेख है कि सम्राट शिलादित्य (जिसकी पहचान हर्षवर्धन के रूप में हुई है) हर पाँच वर्षों में इकट्ठा की हुई अपनी संपत्ति को जनता के बीच वितरित कर देते थे (देखें परिशिष्ट 2)। हालांकि ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ता कामा मैकलीन ने उल्लेख किया है कि यूएनत्सांग ने जिस मेले का उल्लेख किया है, वह शायद कोई बौद्ध उत्सव हो सकता है, क्योंकि वह हर 5 साल पर होता था और कुम्भ 12 साल पर आयोजित होते हैं। इसके अतिरिक्त हर्षवर्धन एक बौद्ध सम्राट थे।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

यह रोचक और आश्चर्यजनक तथ्य है कि 19वीं शताब्दी से पहले प्रयाग में कुम्भ-मेले का कोई ठोस उल्लेख नहीं मिलता है। मत्स्यपुराण के प्रयागमाहात्म्य (अध्याय 103-112) में प्रयाग की महिमा का विस्तृत वर्णन है, किन्तु वहाँ भी कुम्भ-मेले का उल्लेख नहीं है। बंगाल के महान आध्यात्मिक संत चैतन्य महाप्रभु (1486-1534) ने 1514 में प्रयाग की यात्रा की और मकर संक्रांति पर स्नान में भाग लिया। किन्तु बांग्ला-भाषा के ग्रन्थ 'चैतन्य-चरितामृत' में उल्लेख है कि उन्होंने एक माघ मेले (कुम्भ-मेला नहीं) में संगम में स्नान किया था। गोस्वामी तुलसीदास (1497-1623) ने श्रीरामचरितमानस (1574-1576) में प्रयाग में वार्षिक माघ-माले का उल्लेख किया है, किन्तु वहाँ भी 12 साल के चक्र का कोई सन्दर्भ नहीं है। निजामुद्दीन अहमद (1551-1621) के 'तबकात-ए-अकबरी (1590) में भी उल्लेख है कि यह मेला सालाना है। अबुल फजल (1551-1602) ने 'आइन-ए- अकबरी' (1598) में उल्लेख किया है कि प्रयाग विशेष रूप से माघ के महीने में पवित्र माना जाता है। सुजान राय ने 'खुलासत-उत्तवारीख' (1695-1699) में हरिद्वार-कुम्भ का उल्लेख किया है और प्रयाग के मेले को एक वार्षिक मेला बताया है। बहादुर सिंह ने अपने फारसी-विश्वकोश 'यादगार-ए-बहादुरी' (1834) में उल्लेख किया है कि प्रयाग में मेला-मेघा में हर सर्दी में आयोजित किया जाता है, जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है।

कुंभ मेला की कहानी उस समय की है जब देवता पृथ्वी पर निवास करते थे. वे ऋषि दुर्वासा के श्राप के कारण कमजोर हो गए थे और राक्षस पृथ्वी पर तबाही मचा रहे थे. कुंभ से जुड़ी एक पौराणिक कथा के अनुसार एक बार महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण स्वर्ग से सभी प्रकार का ऐश्वर्य, धन, वैभव खत्म हो गया। तब सभी देवता भगवान विष्णु के पास गए। विष्णुजी ने उन्हें असुरों के साथ मिलकर समुद्र मंथन करने की सलाह दी और कहा कि समुद्र मंथन से जो अमृत निकलेगा उसे पी कर सभी देवता अमर हो जाएंगे। देवताओं ने असुरों के राजा बलि को समुद्र मंथन के लिए तैयार किया। इस मंथन में वासुकि नाग की नेती बनाई गई और मंदराचल पर्वत की सहायता से समुद्र को मथा गया था। समुद्र मंथन में 14 रत्न निकले थे। भगवान धनवंतरि अपने हाथों में अमृत कलश लेकर निकले थे। जब अमृत कलश निकला तो देवताओं के साथ असुर भी उसका पान करने को आतुर हो गए और इसक कारण देवताओं और दानवों में युद्ध होने लगा। इस दौरान कलश से अमृत की बूंदें चार स्थानों हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में गिरी थीं। ये युद्ध 12 वर्षों तक चला था, इसलिए इन चारों स्थानों पर हर 12-12 वर्ष में एक बार कुंभ मेला (Kumbh Mela) लगता है। इस मेले में सभी अखाड़ों के साधु-संत आते हैं ।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

कुंभ में माने गए महत्वपूर्ण ग्रह

सारे नवग्रहों में से सूर्य, चंद्र, गुरु और शनि की भूमिका कुंभ में महत्वपूर्ण मानी जाती है। जब अमृत कलश को लेकर देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध चल रहा था तब कलश की खींचा तानी में चंद्रमा ने अमृत को बहने से बचाया, गुरु ने कलश को छुपाया था, सूर्य देव ने कलश को फूटने से बचाया और शनि ने इंद्र के कोप से रक्षा की। इसीलिए ही तो जब इन ग्रहों का योग संयोग एक राशि में होता है तब कुंभ मेले का आयोजन होता है. हर तीसरे वर्ष कुंभ का आयोजन होता है. गुरु ग्रह एक राशि में एक साल तक रहता है और हर राशि में जाने में लगभग 12 वर्षों का समय लग जाता है। इसीलिए हर 12 साल बाद उसी स्थान पर कुंभ का आयोजन किया जाता है. निर्धारित चार स्थानों में अलग-अलग स्थान पर हर तीन साल में कुंभ लगता है. प्रयाग का कुंभ के लिए आशिक महत्व है। 144 वर्ष बाद यहां पर महाकुंभ का आयोजन होता है.

कुंभ मेलों के प्रकार

ज्योतिषि शास्त्रों के अनुसार, देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरंतर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के बराबर होते है। इस तरह कुंभ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं। शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं। देवलोक में होने वाले कुंभ देवताओं के लिए होते है।

कुंभ मेला: चार अलग-अलग स्थानों पर राज्य सरकारों द्वारा हर तीन साल में आयोजित किया जाता है।

लाखों लोग आध्यात्मिक उत्साह के साथ भाग लेते हैं.।

महाकुंभ मेला: यह केवल प्रयागराज में आयोजित किया जाता है. यह प्रत्येक 144 वर्षों में या 12 पूर्ण कुंभ मेले के बाद आता है.

पूर्ण कुंभ मेला: यह हर 12 साल में आता है। मुख्य रूप से भारत में 4 कुंभ मेला स्थान यानि प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में आयोजित किए जाते हैं. यह हर 12 साल में इन 4 स्थानों पर बारी-बारी आता है.

अर्ध कुंभ मेला: इसका अर्थ है आधा कुंभ मेला जो भारत में हर 6 साल में केवल दो स्थानों पर होता है यानी हरिद्वार और प्रयागराज.

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

माघ कुंभ मेला: इसे मिनी कुंभ मेले के रूप में भी जाना जाता है जो प्रतिवर्ष और केवल प्रयागराज में आयोजित किया जाता है. यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार माघ के महीने में आयोजित किया जाता है।

कुंभ मेले के आयोजन के स्थान का चुनाव

कुंभ मेले का आयोजन चार नगरों में होता है:- हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन। चारों नगरों के आने वाले कुंभ की स्थिति विशेष होती है। एक ओर जहां नासिक और उज्जैन के कुंभ को आमतौर पर सिंहस्थ कहा जाता है तो अन्य नगरों में कुंभ, अर्धकुंभ और महाकुंभ का आयोजन होता है। अर्ध का अर्थ है आधा। हरिद्वार और प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ का आयोजन होता है। कुम्भ राशि में बृहस्पति का प्रवेश होने पर एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर कुम्भ का पर्व हरिद्वार में आयोजित किया जाता है। प्रत्येक 12 वर्ष में पूर्णकुंभ का आयोजन होता है। जैसे मान लो कि उज्जैन में कुंभ का अयोजन हो रहा है, तो उसके बाद अब तीन वर्ष बाद हरिद्वार, फिर अगले तीन वर्ष बाद प्रयाग और फिर अगले तीन वर्ष बाद नासिक में कुंभ का आयोजन होगा। उसके तीन वर्ष बाद फिर से उज्जैन में कुंभ का आयोजन होगा। इसी तरह जब हरिद्वार, नासिक या प्रयागराज में 12 वर्ष बाद कुंभ का आयोजन होगा तो उसे पूर्णकुंभ कहेंगे।

हिंदू पंचांग के अनुसार देवताओं के बारह दिन अर्थात मनुष्यों के बारह वर्ष माने गए हैं इसीलिए पूर्णकुंभ का आयोजन भी प्रत्येक बारह वर्ष में ही होता है। जब ब्रहस्पति वर्षभ राशि में प्रवेश करते हैं और सूर्य मकर राशि में तब कुंभ मेले का आयोजन प्रयागराज में किया जाता है। जब सूर्य मेष राशि और ब्रहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करते हैं तब कुंभ मेले का आयोजन हरिद्वार में किया जाता है। जब सूर्य और ब्रहस्पति का सिंह राशि में प्रवेश होता है तब यह महाकुंभ मेला नासिक में मनाया जाता है। जब ब्रहस्पति सिंह राशि में और सूर्य देव मेष राशि में प्रवेश करते हैं तब कुंभ मेले का आयोजन उज्जैन में किया जाता है। यहीं आपको बता दें कि जब सूर्य देव सिंह राशि में प्रवेश करते हैं, इसी कारण उजैन, मध्यप्रदेश में जो कुंभ मनाया जाता है उसे सिंहस्थ कुंभ कहते हैं।

कुंभ मेले (Kumbh Mela) का महत्व

कुंभ मेला पृथ्वी पर सबसे बड़े तीर्थस्थलों में से एक है। विशेष दिनों में, गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों में स्नान मुख्य अनुष्ठान है। यह माना जाता है कि इस तरह का बपतिस्मा जन्म से विरासत में मिले पापों को धो देगा। भारत के विभिन्न

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

हिस्सों से और जीवन के सभी क्षेत्रों से लाखों नागा संत, दिगंबरन, अखोरी, योगी के रूप में जाने जाते हैं। वहआम लोगों की बजाय कहीं दूर से आते हैं और केवल कुंभ मेले के दौरान सभ्यता का दौरा करते हैं, पवित्र नदियों में स्नान करते हैं और कहीं छिप जाते हैं। फिर वह कभी दिखाई नहीं देते हैं। खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, पारंपरिक प्रथाओं, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं और अन्य प्रथाओं को कुंभ मेले के अनुभव बहुत समृद्ध बनाते हैं। कुंभ मेले का आध्यात्मिक आनंद और रुक-रुक कर जप, अखाड़ों का दिल को लुभाने वाला ताल और नृत्य, हाथियों, घोड़ों और रथों पर बपतिस्मा के लिए आने वाले नागा गरीबों की शानदार तलवारें और अनुष्ठान, साथ ही साथ कई आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम, हम सभी को यादों और अनुभवों का महत्वपूर्ण अनुभव देते हैं। कुंभ स्नान करते समय विशेषतौर पर ध्यान रखना चाहिए कि नदी में पांव रखने से पहले नदी को प्रणाम करें, उसमें पुष्प और अपनी इच्छा शक्ति मुद्रा डालें। इसके बाद नदी में स्नान करें। स्नान करने के पश्चात किसी साधु को वस्त्र आदि का दान जरूर करें।

ज्योतिषीय महत्व

पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा नदी के जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अन्तरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुम्भ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है।[3] हालाँकि सभी हिन्दू त्योहार समान श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाए [4] जाते है, पर यहाँ अर्ध कुम्भ तथा कुम्भ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है। ज्योतिष गणना के क्रम में कुम्भ का आयोजन चार प्रकार से माना गया हैः

- बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में
- बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में
- बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

- बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में

धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुम्भ पर्व को तत्त्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, जिससे कुम्भ की उपयोगिता सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्त्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है। कहा भी गया है "यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" अर्थात् जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इस लिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है-'कुम्भ', और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है।

कुंभ/महाकुंभ सनातन धर्म का महत्वपूर्ण पर्व है। जिसे "धार्मिक रूप से दुनिया के तीर्थयात्रियों की सबसे बड़ी मंडली" के रूप में जाना जाता है। इसका इतिहास काफी साल पुराना है। भारत में यह मेला बहुत अनूठा है। जिसमें पूरी दुनिया से लोग आते हैं। धर्म, संस्कृति और आस्था का विशाल तीर्थ है। जिसमें हिंदू एक पवित्र नदी में स्नान करने के लिए इकट्ठा होते हैं। केवल भारत के हिंदू ही नहीं बल्कि यहां विदेशी पर्यटक भी, इस तीर्थ स्थान के मेले में इस समय उपस्थित होते हैं। मुख्य रूप से इसमें दुनिया भर के, साधु संत जो कि भगवा वस्त्र पहनते हैं ,तपस्वी तीर्थयात्री आदि भक्तगण भाग लेते हैं। दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक सम्मेलन है। इसे हिंदू धर्म संस्कृति का भी महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। इसका अपना ही धार्मिक महत्व है।

सनातन संस्कृति में दान का बहुत महत्व माना गया है, इसके अनुसार यदि किसी को भी कुंभ स्नान करना हो तो उसके बाद कुछ न कुछ दान करके ही जाएं। कुंभ स्नान से शनि की अशुभता और राहु केतु से बनने वाले दोषों से भी निजात मिलती है। कुंभ में स्नान, दान और पूजा से जीवन में सुख शांति और समृद्धि आती है। मान्यताओं के अनुसार कुंभ में स्नान करने से कई प्रकार की बाधाओं से छुटकारा मिलता है। खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति के होने वाले इस योग को "कुम्भ स्नान-योग" कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ

स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है। इसका हिन्दू धर्म मे बहुत ज्यादा महत्व है। जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुंभ पर्व स्थल प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। कुंभ नाम अमृत के अमर पात्र या कलश से लिया गया है। कुंभ स्नान का हिंदू धर्म में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है कुंभ स्नान से सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिलती है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है|

निष्कर्ष

कुम्भ/महाकुंभ केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारत की सनातन परंपरा की गहरी सांस्कृतिक विविधता और आध्यात्मिक चेतना का विराट प्रतीक है। इसका स्वरूप हजारों वर्षों से चलता चला आ रहा है और आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वैदिक काल में था। यह आयोजन भारत की "एकता में अनेकता" की भावना को उजागर करता है, जहाँ देश के कोने-कोने से लाखों लोग धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से ऊपर उठकर एक स्थान पर एकत्र होते हैं। बल्कि यह वैश्विक जगत में प्रसिद्ध है। महाकुंभ में समाहित तत्व—जैसे तीर्थ स्नान, संतों का संग, धार्मिक प्रवचन, लोककलाएं, आध्यात्मिक संवाद—सनातन संस्कृति को न केवल संरक्षित करते हैं, बल्कि उसे आने वाली पीढ़ियों तक जीवंत रूप में पहुँचाते हैं। यह आयोजन वैश्विक स्तर पर भी भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शक्ति का संदेश देता है। वर्तमान समय में जब आधुनिकता और उपभोक्तावाद जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है, महाकुंभ जैसे आयोजनों की महत्ता और बढ़ जाती है। यह न केवल आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करता है, बल्कि भारतीय समाज को उसकी मूल सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य करता है। इस प्रकार, महाकुंभ भारत की सनातन एवं सांस्कृतिक विरासत का अमूल्य रत्न है, जो न केवल अतीत की स्मृति है, बल्कि वर्तमान की चेतना और भविष्य की दिशा भी तय करने में सहयोगी बनता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1 ऋग्वेद 10.89.7, 1.11.67,10.75 |

2 -शुक्लयजुर्वेद, 19.87

3 सामवेद, 6.3

4 अथर्ववेद 19.53.3, 4.347, 16.6.8.

5 मत्स्य पुराण, 104. 16- 20 , पद्मपुराण,127. 5, नारदपुराण 63. 13-14

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

6 महाभारत, अनुशासनपर्व , 26. 36- 38, वनपर्व, 85.76- 81. अनुशासनपर्व, 26.36-38 गीताप्रेस-संस्करण

7 श्री कुम्भशतकम्, 3,4 |

8 दीक्षित हृदयनारायण, हिंदुत्व का मधु, पृष्ठ 220

9 चतुर्वेदी,संजय. कुम्भ मंथन का महापर्व, पृष्ठ 1975

10 कुमार, निर्मलेंदु. प्रयागराज और कुम्भ, पृष्ठ, 2019

11 चतुर्वेदी, हेरम्ब. कुम्भ ऐतिहासिक वांग्मय पृष्ठ 20.

12 "कुंभ मेला के पीछे ये हैं ज्योतिषीय और पौराणिक कारण". *Jagran blog*. अभिगमन तिथि 2021-12-12

13 भारतीय संस्कृति के स्त्रोत श्री भगवतशरण उपध्याय

14 प्रयागराज गजेटियर

15 "संस्कृति के चार अध्याय" रामधारी सिंह दिनकर – लोक भारतीय प्रकाशन इलाहाबाद

The Asian